सपनों के-से दिन

गद्यांश

-गुरदयाल सिंह

लेखक 'गुरदयाल सिंह' ने कहानी 'सपनों के–से दिन' में अपने बचपन की खट्टी–मीठी यादों को बड़े ही रोचक ढंग में प्रस्तुत किया है। लेखक ने बताया है कि किस तरह देश, प्रदेश, जाति, वेशभूषा, भाषा आदि सभी प्रकार के भेदों को भुलाकर बच्चों में दोस्ती हो जाया करती थी। अपने विद्यालय के दो अध्यापकों का लेखक ने विशेष ज़िक्र किया है। उन दोनों से ही जुड़ी बहुत–सी यादों को लेखक ने प्रस्तुत पाठ के माध्यम से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

Topic Notes

- पाठ का सारांश
- पाठ संदेश
- कठिन शब्द तथा उनके अर्थ

पाठ का सारांश

लेखक और उनके मित्र

लेखक धूल-मिट्टी में चोटें खाकर भी घंटों खेलते रहते थे। जिन लड़कों के साथ वे खेलते थे, उनमें से कोई हरियाणा तो कोई राजस्थान का होता था। पूरी तरह एक दूसरे की भाषा समझ में न आना भी खेल में रुकावट नहीं बनता था। जब चोटें खाकर घर पहुँचते थे, तो प्यार-दुलार के बजाय मार ही खाने को मिलती थी। अधिकतर बच्चों के पिता इतने गुस्से वाले होते थे कि मारते वक्त यह भी न देखते कि कहाँ लग रही है और खून निकल रहा है। उस समय लेखक इस बात को समझ नहीं पाते थे कि इतनी पिटाई होने पर भी खेलने-कूदने का आकर्षण कम क्यों नहीं हो पाता था ।

उदाहरण 1. **कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती। पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है? [NCERT]**

उत्तर : लेखक ने अपने बचपन की यादों को उकेरते हुए यह बताया है कि जिन साथियों के साथ वह खेला करते थे उनमें से अधिकतर हरियाणा और राजस्थान से संबंधित परिवारों के हुआ करते थे। वे एक-दूसरे की भाषा को पूरी तरह समझ नहीं पाते थे किंतु फिर भी परस्पर विद्यमान भाषा का यह अंतर कभी भी उनके खेलने-कूदने में, मित्रता में बाधा नहीं बना। भाषा को बिना समझे ही वह बड़ी कुशलता, उत्साह और उमंग के साथ घंटों मिलजुल कर खेला करते थे। इससे स्पष्ट है कि कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बन सकती। यदि हमारे दिल मिले हों, तो हम बिना भाषा समझे भी एक-दूसरे के मन की बात समझ सकते हैं और बेहतरीन संबंध स्थापित कर सकते हैं।

शिक्षा के प्रति अरुचि

अधिकांश बच्चों की विद्यालय जाने में बिलकुल रुचि नहीं थी और न ही घर के लोग शिक्षा का महत्व समझते थे। अधिकांश बच्चों के पिता व्यापारी थे जिन्हें लगता था कि थोड़ा बहुत पढ़कर, हिसाब-किताब करना सीखना ही व्यापार संभालने के लिए काफी है। अधिक पढ़ने-लिखने की आवश्यकता नहीं है। इस कारण अधिकतर बच्चे विद्यालय जाते ही नहीं थे और जो जाते भी थे, बड़े बेमन से ही स्कूल पहुँचते थे। कक्षा में बैठना चारदीवारी में कैद हो जाने के बराबर समझते थे।

ग्रीष्मावकाश और गृह कार्य

जब दो महीने के लिए ग्रीष्म अवकाश होता, तब खेलकूद में वक्त कैसे निकल जाता पता भी नहीं चलता। लेखक उन दिनों ननिहाल जाया करते थे। वहाँ दूध-मलाई के साथ-साथ ढेर सारा प्यार भी मिलता था। वहाँ जाकर तालाब में डुबकियाँ लगाना, खुद हाथ-पैर मारकर कुशल तैराक बन जाना, रेत के टीले पर चढ़कर नीचे फिसलना और न जाने कितनी शरारतें किया करते थे। ग्रीष्मावकाश कार्य भी मिला करता जिसे पहले तो टालते रहते थे। जब अवकाश समाप्त होने को आता तब हिसाब लगाने लगते कि रोज कितने सवाल करेंगे तो कार्य समाप्त हो जाएगा। करते-करते दिन बीतते जाते किंतु अध्यापकों द्वारा किया गया कार्य समाप्त न हो पाता।

उदाहरण 2. **लेखक अपने छात्र जीवन में छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या योजनाएँ बनाया करते थे और उस के पूरा न हो पाने की स्थिति में किसकी भाँति बहादुर बनने की कल्पना किया करते थे? [NCERT]**

उत्तर : लेखक ने अपने छात्र जीवन का परिचय देते हुए बताया है कि जब वे नई कक्षा में जाते थे तब डेढ़-दो महीने पढ़ाई के बाद ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाता था। वह उनके लिए सबसे सुनहरा समय होता था। बिना किसी फिक्र के छुट्टियों के अधिकांश दिन तो खेलने-कूदने में बिता दिया करते थे। यह भूल ही जाते थे कि उस अवकाश के लिए गृह कार्य भी मिला है। जब छुट्टियाँ समाप्त होने को आतीं तब उन्हें गृह कार्य करने की चिंता सताने लगती। योजना बनाते कि कितना काम रोज करेंगे तो बची हुई छुट्टियों में पूरा हो जाएगा। सोचते-सोचते दस दिन और निकल जाते और फिर तो ऐसा लगता है मानो दिन तेजी से भाग रहे हैं। फिर उन्हें अध्यापकों की मार का डर सताने लगता। ऐसे में वे छात्रों के नेता ओमा को याद करते थे और उससे प्रेरित होकर काम करने की अपेक्षा अध्यापकों की मार खाना सस्ता सौदा समझकर बिना काम किए ही रह जाते थे।

ओमा का परिचय

उनके छात्रों का नेता ओमा हुआ करता था, जिसका शारीरिक गठन और व्यक्तित्व अपने आप में निराला था। उसकी बातें, मार पिटाई का ढंग सभी कुछ अलग था। उसके जैसा कोई अन्य छात्र नहीं था। उसका कद ठिगना था और सिर बहुत बड़ा था। ऐसा लगता था मानो बिल्ली के बच्चे के माथे पर बड़ा-सा तरबूज रख दिया हो। जब वह अपने बड़े सिर से किसी को मारता था तो ऐसा लगता था मानो पसलियाँ टूट जाएँगी। ओमा से ही प्रेरित होकर लेखक और उनके मित्र काम करने की अपेक्षा अध्यापकों की मार खाना सच्चा सौदा समझते थे।

मास्टर प्रीतम चंद का परिचय

लेखक के विद्यालय में प्रीतम चंद नाम के एक पीटी मास्टर थे जो बहुत ही अनुशासन प्रिय थे। छात्रों को अनुशासन में बनाए रखने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकते थे। प्रार्थना सभा में जब छात्र सीधी पंक्ति में खड़े होते, तो ज़रा सा भी हिलने पर वे लपककर आते और वार करते। उनके जैसा सख्त अध्यापक कभी किसी ने नहीं देखा था। सभी छात्र उनके नाम से थर-थर काँपते थे। यदि कोई छात्र गलती से भी अनुशासन भंग करता तो वह खाल खींच देने के मुहावरे को प्रत्यक्ष करके दिखा देते थे।

उदाहरण 3. **पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी मास्टर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [NCERT]**

उत्तर : लेखक गुरदयाल सिंह ने अपने विद्यालय के पीटी मास्टर के विषय में जो कुछ बताया है, उससे यही सिद्ध हुआ है कि वह एक बहुत ही सख्त और कठोर स्वभाव के शिक्षक थे। उन्हें छात्रों को अनुशासन में देखना ही पसंद था और उस अनुशासन की खातिर चाहे छात्रों को कठोर दंड देना पड़े या उन्हें मारना-पीटना पड़े या फिर उनकी खाल खींचनी पड़े, वे उसके लिए भी तत्पर रहते थे। उनकी छोटी-सी भी भूल को माफ कर देना या उन्हें प्यार से समझाना वे नहीं जानते थे। जैसे ही मौका मिलता छात्रों पर बरस पड़ते। उनके क्रूरतापूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था कि छात्र उनकी अनुपस्थिति में भी उनके भय से काँप जाते थे।

पीटी सर की शाबाशी

पीटी मास्टर का स्वभाव बहुत ही सख्त था। उनका कड़ा स्वभाव भी बच्चों का विद्यालय के प्रति अरुचि का एक कारण था। किंतु कभी-कभी स्काउट की परेड के दौरान जब बच्चे हाथों में दोरंगे रुमाल लेकर, खाकी वर्दी और पॉलिश किए हुए जूते पहनकर कदम से कदम मिलाकर चलते और कोई गलती न होने पर पीटी मास्टर उन्हें शाबाश कहते तब उनकी एक शाबाशी बच्चों के लिए अन्य सभी अध्यापकों से मिली सालभर की शाबाशी से कई गुना अधिक महत्वपूर्ण होती थी। उनके चेहरे पर मुसकान देखना और उनके मुँह से शाबाश सुनना चमत्कार-सा लगता था। पीटी मास्टर के इशारे पर जब चलते थे तो ऐसा लगता था मानो सचमुच फौजी जवान हो गए हैं। यही वह समय था जब उन्हें विद्यालय जाना अच्छा लगता था।

उदाहरण 4. **पीटी साहब की शाबाश फौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए। [NCERT]**

अथवा

स्काउट परेड करते समय लेखक अपने आप को महत्वपूर्ण आदमी फौजी जवान क्यों समझने लगता था? [NCERT]

उत्तर : लेखक ने बड़ी ईमानदारी से यह स्वीकार किया है कि उन्हें विद्यालय जाना बिलकुल पसंद नहीं था। बड़े उदास मन से स्कूल जाया करते थे। किंतु जब स्काउट का पीरियड होता था और दोरंगे रुमाल हाथ में लेकर, पॉलिश किए हुए जूते और धुली खाकी वर्दी पहनकर कदम से कदम मिलाकर चलने का दिन आता था, तो वे खुशी-खुशी विद्यालय जाते थे। पीटी मास्टर की सीटी बजते ही ठक-ठक करके चलना और दाएँ-बाएँ बोलने पर मुड़ना, उनके अंदर आत्मविश्वास और जोश भर देता था। वह महसूस करने लगते मानो वे सचमुच फौजी जवान बन गए हैं और ऐसा करते हुए यदि कोई गलती न होती तो पीटी मास्टर के मुँह से शाबाश निकलता जो अन्य अध्यापकों की सालभर की शाबाशी से भी कहीं ज्यादा मूल्यवान होता था।

उदाहरण 5. **लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने जैसी जगह न लगने पर भी कब और क्यों स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? [CBSE 2014, NCERT]**

उत्तर : पाठ 'सपनों के-से दिन' में लेखक ने बताया है कि उनके और उनके साथियों के लिए स्कूल ऐसी जगह नहीं थी जहाँ वे खुशी-खुशी जाते हों। स्कूल जाने का कोई उत्साह किसी के मन में नहीं होता था। इसका मुख्य कारण था मास्टर प्रीतम चंद जैसे अध्यापकों का सख्त स्वभाव। स्कूल में न जाने कब क्या गलती हो जाए, जिसके लिए अपमानित किया जाए, सख्त सजा दी जाए, यह सोचकर ही वे घबरा जाते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें और उनके परिवार को लगता था कि व्यापार चलाने या दुकान संभालने के लिए कुछ पहाड़े याद कर लेना ही काफी है। स्कूल जाकर औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने का कोई लाभ नहीं है। इसलिए घर की ओर से भी उन्हें स्कूल जाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता था। स्कूल जाना केवल तब अच्छा लगता था जब वहाँ स्काउट की परेड होती और सभी छात्र कदम से कदम मिलाकर एक साथ चलते।

हेडमास्टर शर्मा जी का परिचय

हेडमास्टर शर्मा जी मास्टर प्रीतम चंद से बिलकुल विपरीत स्वभाव के थे। मारना तो दूर, वे कभी छात्रों को ऊँची आवाज में भी नहीं बोलते थे। कभी किसी बात पर गुस्सा आता तो हलकी-सी मीठी चपत लगा देते या अपनी पलकें जल्दी-जल्दी झपकाकर देखते थे। गुस्सा दिखाने का उनका यही तरीका था जो छात्रों को बहुत अच्छा लगता था। यदि कोई अन्य अध्यापक छात्रों के साथ बर्बरता पूर्ण व्यवहार करता था तो हेडमास्टर शर्मा जी उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।

नई कक्षा में जाने का एहसास

नई कक्षा में जाने पर लेखक को एक साल पुरानी किताबें उनके हेडमास्टर जी दिला दिया करते थे। लेखक के घर वालों को उन्हें पढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। यदि नई किताबें लेनी पड़ती तो शायद पढ़ाई कब की बंद हो गई होती। लेखक को उन पुरानी किताबों और नई कॉपियों से एक अजीब-सी गंध आती थी जो उनका बाल-मन उदास कर देती थी। उन्हें कभी भी नई कक्षा में जाने का उत्साह महसूस नहीं हुआ, बल्कि मन भयभीत होने लगता था कि जो अध्यापक पहले भी पढ़ाते थे, उनकी अपेक्षाएँ बढ़ जाएँगी और जो नए अध्यापक आएँगे उनका स्वभाव न जाने कैसा होगा। यह सब सोचकर स्कूल से बहुत दूर लगे पेड़-पौधों की समीप आती गंध से ही उनका मन घबराने लगता था कि अब स्कूल नजदीक आ रहा है।

उदाहरण 6. **नई श्रेणी में जाने और नई किताबों और पुरानी कॉपियों से आती विशेष गंध से लेखक का बाल मन क्यों उदास हो उठता था? [NCERT]**

उत्तर : एक कक्षा की पढ़ाई पूरी होने पर वार्षिक इम्तिहान होते हैं, परीक्षा परिणाम आता है और छात्र नई कक्षा में जाते हैं। यह

अवसर सभी बच्चों को उत्साह और रोमांच से भर देता है। किंतु लेखक को नई कक्षा में जाने की खुशी कभी महसूस नहीं हुई। इसके मुख्य रूप से दो कारण थे- एक यह था कि वह पुरानी किताबों से पढ़ते थे जो हेडमास्टर शर्मा जी उन्हें दिला दिया करते थे। यदि नई किताबें खरीदनी पड़ती तो उनकी पढ़ाई पहले छूट गई होती। पुरानी किताबों और नई कॉपियों से उन्हें अजीब-सी गंध आती थी। दूसरा उन्हें लगता कि अब वे बड़ी कक्षा में आ गए हैं। जो अध्यापक पहले से पढ़ाते हैं उनकी अपेक्षाएँ उनसे बढ़ जाएँगी और जो नए अध्यापक पढ़ाएँगे, उनका व्यवहार न जाने क्या होगा। यही सोचकर नई कक्षा में जाने का उत्साह समाप्त हो जाता और उसकी जगह घबराहट व तनाव पैदा होने लगता था।

दूसरे विश्व युद्ध का समय

दूसरे विश्व युद्ध के समय अंग्रेजी अफसर नौजवानों को फौज में भर्ती होने के लिए आकर्षित किया करते थे। वह नौटंकी वालों को अपने साथ रखते थे, जो अपने गीतों के माध्यम से फौजी जीवन की शान-शौकत, सुख-सुविधाओं का वर्णन करते थे। कुछ नौजवान इन बातों से खुश होकर फौज में भर्ती होने के लिए तैयार हो जाते थे। लेखक और उनके साथियों को तो स्कूल में धुली खाकी वर्दी या पॉलिश किए हुए जूते पहनकर ही फौजी जवान होने का एहसास हो जाता था।

मास्टर प्रीतम चंद की कठोरता

लगभग सभी छात्र पीटी मास्टर प्रीतम चंद से उनके सख्त स्वभाव के कारण डरते तो थे ही, उनसे नफरत भी करने लगे थे। दागों से भरा उनका चेहरा, दुबला-पतला, गठीला शरीर। उनके जूतों में खुर्रियाँ लगी रहती। जहाँ वह जाते, वहाँ उनके निशान पड़ जाते थे। जब लेखक चौथी कक्षा में थे तब मास्टर प्रीतम चंद ने उन्हें फारसी पढ़ाना शुरू किया। अभी एक हफ्ता भी नहीं हुआ था, उन्होंने कुछ शब्द रूप याद करने को दिए। जब याद किए शब्द सुनाने का वक्त आया तो कोई भी बच्चा सुना न सका। वे गुर्राए और सबको मुर्गा बनकर, पीठ ऊँची करके खड़ा होने को कहा। यह बर्बरता हेडमास्टर शर्मा जी ने देख ली और वे इसे सह नहीं सके। उन्होंने पीटी मास्टर को मुअत्तल कर दिया।

उदाहरण 7. **हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी मास्टर को क्यों मुअत्तल कर दिया?** **[NCERT]**

उत्तर : हेडमास्टर शर्मा जी का स्वभाव पीटी मास्टर से बिलकुल भिन्न था। पीटी मास्टर बच्चों को मारने, डाँटने, धमकाने में जरा-भी संकोच नहीं करते थे। जबकि हेडमास्टर शर्मा जी ऐसे व्यवहार को बिलकुल गलत समझते थे। एक दिन जब उन्होंने देखा कि पीटी मास्टर चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनाकर, पीठ ऊँची करने जैसी कठोर सजा दे रहे हैं, जिससे कमजोर बच्चे वहीं गिर रहे हैं, तो उनसे रहा नहीं गया। वह तुरंत वहाँ पहुँचे, पीटी मास्टर को फटकार लगाई और उन्हें मुअत्तल कर दिया।

पीटी मास्टर का नया रूप

मुअत्तल होने के बाद पीटी मास्टर अपने छोटे से किराए के कमरे में आराम-से रहते थे। उन्होंने एक पिंजरा रखा हुआ था और उसमें बंद तोतों को वे बड़े प्यार से छील-छीलकर बादाम खिलाया करते थे। उनका यह रूप देखकर बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्हें लगा कि क्या इन तोतों को उनकी भूरी आँखों से डर नहीं लगता होगा। उस समय लेखक और उनके मित्रों को यह बातें समझ नहीं आती थीं। उन्हें तो यह चमत्कार लगता था कि एक व्यक्ति जो बच्चों के साथ इतना सख्त हो सकता है, वह अपने तोतों के साथ इतना नरम कैसे हो सकता है। यह सब उन्हें अलौकिक प्रतीत होता था।

पाठ संदेश

(1) हमारी भाषा, बोली, जाति भले भिन्न हो पर दोस्ती और रिश्तों में कभी बाधा नहीं बन सकती।
(2) छात्रों को खेल-कूद और पढ़ाई में संतुलन बनाकर चलना चाहिए ताकि शिक्षा के प्रति अरुचि पैदा न हो।
(3) अध्यापकों के स्वभाव में डाँट और प्यार का संतुलन होना चाहिए ताकि बच्चे उनका सम्मान करें, न की उनसे नफरत ।
(4) बच्चों की गलती पर उन्हें उसे सुधारने का अवसर देना चाहिए ताकि वह दुबारा उस गलती को न दोहराएँ।
(5) एक व्यक्ति को जैसा हम समझते हैं जरूरी नहीं कि वह वास्तव में वैसा ही है। कभी-कभी इंसान अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए एक मुखौटा पहन लेता है जबकि उसका वास्तविक चेहरा कुछ और होता है।

अ ब कठिन शब्द तथा उनके अर्थ

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
22	*लोकोक्ति*	लोगों द्वारा कही गई उक्ति
	आँख बचाकर	छुपकर
	चरना	खा जाना

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
22	*सयाना*	समझदार
	बास	दुर्गंध
	ननिहाल	नानी का घर
	टीला	मिट्टी का ढेर/छोटा पहाड़

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
23	*ढांढस बंधाना*	सांत्वना देना
	दुम	पूँछ
	गंदला	गंदा
	सहपाठी	साथ पढ़ने वाला
	सस्ता सौदा	आसान काम
	बलिश्त	हथेली का नाप
24	*कतार*	पंक्ति
	घुड़की	धमकी
	ठुड्डे	पैर की नोक की चोट
	पिंडली	घुटने के पीछे का हिस्सा
	खाल खींचना	बहुत मारना
26	*चपत*	हलके हाथ से चाँटा मारना
	दोरंगा	दो रंगों का
	गुडविल	अच्छी छवि
	सतगुर	सतगुरु
	फटकारना	डाँटना
	धनाढ्य	धनी
	दिलचस्पी	रुचि
	फोल्डर	लकड़ी की बनी कलम
	सेर	माप
	चाव	उत्साह
	जिक्र	चर्चा
27	*अपेक्षा*	उम्मीद

पृष्ठ संख्या	शब्द	अर्थ
27	*हरफनमौला*	हर कार्य में निपुण
	अबाऊट टर्न	पूरा घूम जाना
	बूट	मोटे तले के भारी जूते
	विलायत	विदेश
	रियासत	राज्य
	जबरन	जबरदस्ती
	शामियाना	कपड़े का पंडाल
	नौटंकी	नाटक करने वाले
	मसखरा	जोकर
	रंगरूट	सैनिक
	अठे	यहाँ
	उठै	वहाँ
	लीतर	फटे-पुराने कपड़े
28	*खुरियाँ*	जूतों के नीचे दबने वाली लोहे की एड़ी
	गुर्राने	गुस्से से बोलना
29	*बर्बरता*	अत्याचार
	मुअत्तल	निलंबित
	मंजूरी	स्वीकृति
	महकमे तालीम	शिक्षा विभाग
30	*बहाल*	दोबारा नियुक्त करना
	रत्ती भर	बिलकुल थोड़ा
	दहकती	जलती

वर्णनात्मक प्रश्न

[3 अंक]

(50-60 शब्द)

1. लेखक को स्कूल जाने के नाम से उदासी क्यों आती थी? सपनों के-से दिन पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। आपको स्कूल जाना कैसा लगता है और क्यों? [CBSE 2020]

उत्तर : पाठ 'सपनों के-से दिन' में लेखक गुरदयाल सिंह ने अपने बचपन की खट्टी-मीठी यादों को उकेरा है। लेखक ने अपने साथियों के साथ बिताए हुए समय को याद करने के साथ-साथ यह भी बताया है कि वे और उनके अधिकांश साथियों की पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी। वे रोते-बिलखते, उदास मन से ही स्कूल जाया करते थे और कुछ तो ऐसे भी थे जो रास्ते में ही बसता फेंककर खेलने निकल जाते। इसका मुख्य कारण स्कूल का सख्त अनुशासन था। इसके अतिरिक्त बच्चों के माता-पिता पढ़ाई का महत्व नहीं समझते थे। अत: परिवार की ओर से भी बच्चों को स्कूल जाने का प्रोत्साहन नहीं मिलता था।

हमें विद्‌यालय जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। हम अपने अध्यापकों का सम्मान करते हैं, मन में उनके प्रति डर नहीं है। इसका कारण उनका आत्मीय स्वभाव ही है।

2. स्कूल किस प्रकार की स्थिति में अच्छा लगने लगता है और क्यों? [CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : सभी बच्चों की शिक्षा में एक समान रुचि हो यह आवश्यक नहीं और यही कारण है सभी बच्चे खुशी-खुशी

विद्यालय जाएँ, यह भी आवश्यक नहीं। जिन बच्चों को खेल-कूद में अधिक दिलचस्पी होती है, जिनके शरीर में अधिक जोश होता है, वह कक्षा की चारदीवारी में बैठना पसंद नहीं करते। उन्हें हर समय कुछ न कुछ शारीरिक क्रियाएँ करने में रुचि होती है। यदि स्कूल का वातावरण और पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाए कि छात्रों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने का अवसर मिले, शारीरिक और मानसिक रूप से वे व्यस्त भी रहें और उन क्रियाओं के माध्यम से सीखते भी रहें, तो संभव है ऐसी स्थिति में विद्यालय जाना उन्हें अच्छा लगने लगेगा।

3. 'सपनों के-से दिन' कहानी के आधार पर पीटी साहब के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ बताते हुए लिखिए कि स्काउट परेड करते समय लेखक स्वयं को महत्वपूर्ण आदमी एक फौजी जवान क्यों समझता था? [CBSE 2019]

उत्तर : पीटी साहब एक बहुत ही सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। यदि कोई छात्र जाने-अनजाने में नियमों का उल्लंघन करता, तो वह खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर के दिखा देते थे। उनके चेहरे पर छात्रों ने कभी मुसकान नहीं देखी थी। जब छात्र कदम से कदम मिलाकर स्काउट की परेड करते, तो यदि उनके मुँह से शाबाश निकलता तो छात्रों को लगता मानो फौज के तमगे जीत लिए हों। परेड करते समय छात्रों को धुली हुई साफ वर्दी, पालिश किए हुए जूते पहनने होते थे और पीटी साहब के इशारों पर कदम से कदम मिलाकर चलना होता था। ऐसा करते हुए उन्हें महसूस होता मानो वे सचमुच फौजी जवान बन गए हों।

4. छात्रों का नेता कौन था और उसकी क्या खासियत थी? [CBSE 2017]

उत्तर : ओमा छात्रों का नेता था। जब बच्चों को ग्रीष्मावकाश कार्य मिलता था, तो अधिकांश समय वे खेलकूद में बिता देते थे। जब छुट्टियाँ समाप्त होने को आती तब उन्हें काम करने की चिंता सताने लगती। हिसाब लगाते कि कितना काम रोज करेंगे तो पूरा हो जाएगा। किंतु समय निकलता जाता और काम नहीं हो पाता। तब वे ओमा से ही प्रेरणा लेकर काम करने से बेहतर अध्यापकों की डाँट-मार सह लेना सही समझते थे। ओमा की बातें और मार-पिटाई का ढंग तो निराला था ही, उसका शारीरिक गठन भी बड़ा ही विचित्र था। छोटा कद, तरबूज जैसा बड़ा सिर। इतने बड़े सिर में नारियल की सी आँखों वाला, बंदरिया के बच्चे-सा चेहरा बहुत ही अजीब लगता था। इतने बड़े सिर से जब किसी की छाती पर वार करता तो ऐसा लगता मानो पसलियाँ ही टूट जाएँगी और उससे दोगुने कद वाले भी पीड़ा से चिल्लाने लगते थे।

5. अगली कक्षा में जाने के विचार से बच्चे उत्साहित भी होते थे और उदास भी। 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [CBSE 2011]

उत्तर : सालभर की मेहनत के बाद जब बच्चे अगली कक्षा में जाते हैं, तो अलग ही खुशी और उत्साह महसूस करते हैं। लेकिन लेखक ने अगली कक्षा में जाने का चाव कभी महसूस नहीं किया। एक ओर उन्हें इस बात की खुशी तो होती थी कि वह पहले से बड़े हो गए हैं और नई कक्षा में जा रहे हैं लेकिन कुछ बातें थी जो उनका मन उदास भी कर देती थीं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण और शिक्षा में माता-पिता की अरुचि के कारण उन्हें पुरानी पुस्तकों से पढ़ना होता था। पुरानी पुस्तकों और नई कॉपियों से जो गंध आती थी वह उनका बाल मन उदास कर देती थी। साथ ही इस बात की भी चिंता सताती थी कि जो अध्यापक पहले पढ़ाते थे अब उनकी अपेक्षाएँ बढ़ जाएंगी, उन्हें लगने लगेगा कि अब हम बड़ी कक्षा में आ गए हैं तो हम हरफनमौला यानी अधिक विद्वान बन गए हैं। जो नए अध्यापक पढ़ाएँगे उनका व्यवहार न जाने कैसा होगा। यह सब बातें सोचकर लेखक का उत्साह कम हो जाता और मन घबराने लगता था।

6. छुट्टियाँ बीत जातीं तो बच्चों में स्कूल का भय क्यों चढ़ने लगता? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : जब लेखक छोटे थे, तब वार्षिक परिणाम आने के बाद डेढ़ - दो महीना पढ़ाई होती थी, उसके बाद ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाता था। स्कूल से छुट्टियों में करने के लिए काम दिया जाता था। किंतु अधिकांश छुट्टियाँ तो खेलते-कूदते कब बीत जातीं, पता भी नहीं चलता था। जब छुट्टियाँ खत्म होने को आतीं तो ग्रीष्मावकाश कार्य याद आता। तब हिसाब लगाते कि रोज़ कितना काम करने पर सारा काम पूरा हो जाएगा। जैसे हिसाब के मास्टर जी दो सौ सवाल देते। हिसाब लगाया जाता कि रोज 10 सवाल भी करेंगे तो 20 दिन में पूरे हो जाएँगे। किंतु सोचते-सोचते 10 दिन और बीत जाते। ऐसा लगने लगता मानो दिन छोटे हो गए हैं और काम आगे बढ़ ही नहीं रहा। तब स्कूल की पिटाई का डर बढ़ने लगता था।

7. ओमा कौन था? उसकी क्या विशेषताएँ थी? [CBSE 2013, 12, 11]

उत्तर : लेखक जब स्कूल में पढ़ते थे, तो छात्रों का नेता ओमा हुआ करता था। उसका स्वभाव और शारीरिक गठन दोनों ही बड़े विचित्र थे। उसकी बातें और मार-पिटाई का ढंग निराला ही था। ठिगना कद और बड़ा-सा सिर। ऐसा लगता था मानो बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। उस बड़े से सिर में नारियल जैसी आँखें और बंदरिया

जैसा चेहरा कुछ अलग ही दिखता था। उस बड़े सिर से जब वह किसी के पेट पर वार करता था, तो लगता था मानो पसलियाँ ही टूट जाएँगी। उसकी उस चोट को बच्चों ने रेल-बंबा नाम दिया हुआ था। ओमा ही था जिससे प्रेरित होकर बच्चे काम करने की अपेक्षा अध्यापकों की डाँट-मार खाना अधिक सस्ता सौदा समझते थे।

8. स्कूल की पिटाई का डर भुलाने के लिए लेखक क्या सोचा करता था? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2011]

उत्तर : स्कूल के सख्त नियमों और पीटी साहब जैसे सख्त अध्यापकों के कारण लेखक स्कूल जाने से घबराते थे। उनकी और परिवार की शिक्षा के प्रति अरुचि भी एक कारण था जो उन्हें स्कूल जाने से रोकता था। किंतु वह उस दिन को याद करते थे जब स्काउट की परेड होती। हाथों में दो रंग के रुमाल लेकर कदम से कदम मिलाकर चलते और कोई गलती न होने पर वही पीटी साहब शाबाश बोल देते जो कभी मुसकुराते नहीं थे। बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए सख्त से सख्त सजा देने को तत्पर रहते थे। जब कभी लेखक और उनके साथियों का मन बहुत उदास हो जाता तब वह उन्हीं स्काउट के दिनों को याद करके अपने आप को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करते थे। इसके अतिरिक्त हेडमास्टर शर्मा जी जैसे विनम्र स्वभाव के अध्यापक भी थे जिनकी निगरानी में बच्चे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते थे।

9. फौज में भर्ती करने के लिए अफसरों के साथ नौटंकी वाले क्यों आते थे? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2013, 11]

उत्तर : द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। अंग्रेजी अफसर यह चाहते थे कि भारत के ज्यादा से ज्यादा नौजवान उनकी सेना में भर्ती हो जाएँ। इसके लिए कुछ अफसर अपने साथ नौटंकी वालों को लेकर आते और नौजवानों को सैनिकों के जीवन की सुख-सुविधाएँ और ऐशो-आराम के दृश्य दिखाकर आकर्षित करने की कोशिश करते थे। नौटंकी वाले रात को खुले मैदान में शामियाने लगाकर खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत करते। कुछ मसखरे अजीब-सी वर्दियाँ पहनकर, फौजी बूट पहनकर गीत गाया करते जिनका अर्थ होता था कि नौजवानों, फौज में भर्ती हो जाओ। यहाँ तुम्हें अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े पहनने को नहीं मिलते जबकि फौज में तुम्हें बढ़िया से बढ़िया कपड़े और अच्छे से अच्छा भोजन मिलेगा। तुम्हारी जिंदगी ही बदल जाएगी। गाँव के कुछ नौजवान उनकी बातों में आकर फौज में भर्ती हो जाया करते थे।

10. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए। [CBSE 2012]

11. 'सपनों-के-से-दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : लेखक गुरदयाल सिंह ने अपने स्कूल के जिन अध्यापकों का जिक्र किया है, उनमें से एक थे पीटी मास्टर जो बहुत ही कड़क स्वभाव के थे। बच्चों को मारने, कड़ी सजाएँ देने में उन्हें जरा भी संकोच नहीं होता था। जबकि हेडमास्टर शर्मा जी बहुत ही विनम्र स्वभाव के थे। मारना तो दूर, छात्रों से ऊँची आवाज में बात करना भी पसंद नहीं करते थे। न ही यह चाहते थे कि कोई अन्य अध्यापक छात्रों के साथ सख्ती से पेश आए। यही कारण था कि जब उन्होंने पीटी मास्टर को बच्चों पर अत्याचार करते देखा तो तुरंत उन्हें मुअत्तल कर दिया। वे छात्रों को सुधारने के लिए शारीरिक दंड देने के बिलकुल खिलाफ थे। नैतिक मूल्यों की दृष्टि से देखा जाए तो यह सही भी है। किसी को डरा-धमकाकर प्यार करना और गुस्सा करके विनम्र होना नहीं सिखाया जा सकता। जैसा हम बच्चों को बनाना चाहते हैं पहले वैसा बनकर दिखाना पड़ता है। शिक्षा के नाम पर गलती से भी बच्चों में नैतिक मूल्यों का ह्रास नहीं होना चाहिए। यदि हम विद्यार्थियों से उत्तम व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं तो हमें खुद भी धैर्य, सहानुभूति, सद्भावना, प्रेमभाव जैसे आदर्श जीवन मूल्यों पर अमल करके दिखाना चाहिए।

12. मास्टर प्रीतम चंद के व्यक्तित्व और पहनावे को भयभीत करने वाला क्यों कहा है? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2014]

उत्तर : मास्टर प्रीतम चंद एक ऐसे अध्यापक थे जिनका व्यक्तित्व और पहनावा दोनों ही छात्रों को भयभीत करने के लिए काफी था। बच्चों से जाने-अनजाने कोई भी गलती हो जाए, वे कभी माफ नहीं करते थे बल्कि सख्त से सख्त सजा देने के लिए तत्पर रहते थे। उनका पहनावा और शक्ल सूरत भी यही बताती थी कि वह स्वभाव से बहुत सख्त हैं। माता के दागों से भरा चेहरा, दुबला-पतला शरीर, कील लगे हुए भारी-भरकम जूतों से जब वे फर्श पर चलते, तो उनके जूतों के निशान बन जाते थे। किसी छात्र से जरा-सी भूल हुई नहीं कि बाज की तरह झपटकर आते और खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर देने की कोशिश करते।

छात्रों के मन में उनका इतना खौफ था कि जब उन्हें मुअत्तल कर दिया गया, तब भी उनका कालांश आने पर जब तक कोई अन्य अध्यापक कक्षा में न आ जाता, बच्चों की साँसें रुकी रहती थीं।

13. 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि अभिभावकों की बच्चों की पढ़ाई में रुचि क्यों नहीं थी? पढ़ाई को व्यर्थ समझने में उनके क्या तर्क थे? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2014]

14. 'सपनों-के-से-दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि बच्चों का खेल-कूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय क्यों लगता है? पढ़ाई के साथ खेलों का छात्र जीवन में क्या महत्व है और इससे किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2015]

उत्तर : लेखक 'गुरदयाल सिंह' ने अपने बचपन की जिन खट्टी-मीठी यादों को पाठ 'सपनों के-से दिन' में वर्णित किया है, उससे यह स्पष्ट है कि उनके माता-पिता उन्हें खेलने-कूदने से रोकते थे और यदि वह घंटों खेलकर चोटें खाकर आते, तो उनकी खूब पिटाई होती थी। अक्सर माता-पिता बच्चों को खेलने के लिए रोकते हैं। शायद उन्हें लगता है कि वह समय बर्बाद कर रहे हैं। बाहर खेलने से चोट लगने का खतरा रहता है, गलत संगत में पड़ने का भी डर बना रहता है। किंतु यह सच नहीं है। खेल खेलना व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सब बच्चे मिलकर खेलते हैं तो उनके अंदर खेल भावना के साथ-साथ सहयोग, सहानुभूति, धैर्य, सद्भावना आदि गुणों का भी विकास होता है। खेलते समय जीतने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और हारने से जीवन में असफलता को स्वीकार करना भी आता है।

15. बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति हेडमास्टर शर्मा जी की क्या धारणा थी? बच्चों के संतुलित विकास में एक अध्यापक की क्या भूमिका होती है? [Diksha]

उत्तर : हेडमास्टर शर्मा जी बच्चों को मारने-पीटने के बिलकुल खिलाफ थे। ऐसे मास्टर जो छात्रों के साथ सख्ती से पेश आते, उनकी छोटी-बड़ी गलतियों पर समझाने की बजाय उन्हें पीटते, उनका उचित मार्गदर्शन करने की बजाय उन्हें कठोर सजाएँ देते, वे मास्टर शर्मा जी को बिलकुल पसंद नहीं थे। जैसे ही उन्होंने देखा कि मास्टर प्रीतम चंद चौथी श्रेणी के बच्चों को शब्द रूप न सुनाने के लिए कठोर दंड दे रहे हैं, वह सहन नहीं कर पाए। वह उन पर बहुत बरसे और उन्हें तुरंत मुअत्तल कर दिया।

अध्यापक का कार्य केवल बच्चों को पढ़ाना या अनुशासन में बांधना नहीं होता बल्कि अध्यापक का पूरा व्यक्तित्व बच्चे के लिए एक सीख होती है। वह अध्यापक के शब्दों से ज्यादा उसके व्यवहार से सीखता है। शिक्षक का व्यवहार ही उसे नैतिक मूल्यों से परिचित कराता है अत: शिक्षक को अपनी हर क्रिया विवेकपूर्वक करनी चाहिए।

16. पाठ के आधार पर हेडमास्टर शर्मा जी और पीटी टीचर के स्वभाव का तुलनात्मक वर्णन कीजिए। [Diksha]

उत्तर : लेखक के विद्यालय के पीटी टीचर और हेड मास्टर शर्मा जी के स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर था।

पीटी सर छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। जब बच्चे प्रार्थना सभा में एकत्रित होते तो उनकी घुड़कियों और ठुड्डों के डर से सीधी कतार में और बराबर दूरी के साथ खड़े होते थे। जरा-सा किसी का सिर भी हिला तो वह बाघ की तरह झपटते और खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे। उन्होंने चौथी कक्षा को फारसी पढ़ाना शुरू किया तो एक दिन शब्द रूप याद न करके आने पर बच्चों को इतनी सख्त सजा दी कि कुछ कमजोर बच्चे तो वहीं गिर गए। उन्हें बच्चों की हालत पर कभी तरस नहीं आता था। उन जैसा सख्त अध्यापक न कभी किसी ने सुना न देखा था। दूसरी ओर हेडमास्टर शर्मा जी बहुत ही नरम स्वभाव के थे। अधिक गुस्से में अपनी पलकें जल्दी-जल्दी झपकाते थे या उलटे हाथ की एक हलकी-सी चपत लगाते जो बच्चों को चटपटी नमकीन जैसी मजेदार लगती थी। सभी बच्चे उन से डरने की बजाय उनका सम्मान करते थे। यदि कोई अन्य अध्यापक छात्रों को सुधारने के नाम पर उन पर अत्याचार करता, तो वह उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।

17. पाठ के लेखक द्वारा वर्णित खेलों और वर्तमान में खेले जाने वाले खेलों में आप क्या अंतर पाते हैं? [Diksha]

उत्तर : खेलकूद के प्रति बच्चों का आकर्षण स्वाभाविक है। यह उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक भी है। किंतु खेलों का भी स्वरूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। जिस प्रकार के खेलों का वर्णन लेखक गुरदयाल सिंह ने पाठ में किया है, आज के बच्चे शायद उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। तालाब में कूदते, हाथ-पैर मारकर कुशल तैराक हो जाते और गीले बदन के साथ रेत के टीलों पर चढ़ जाते। कहीं चोट खाकर घर पहुँचते तो और पिटाई होती। आज के बच्चे घर बैठकर वीडियो गेम खेलना अधिक पसंद करते हैं। जो बाहर खेलने जाते भी हैं तो क्रिकेट, फुटबॉल या औपचारिक रूप से तैराकी प्रशिक्षण लेते हैं। पढ़ाई का बोझ अधिक होने के कारण खेलने का समय निर्धारित करते हैं। अपने आप को धूल-मिट्टी से बचाने की कोशिश करते हैं और खाने के मामले में जंक फूड अधिक पसंद करते हैं।

18. पीटी सर का कौन सा नया रूप बच्चों के सामने आया और उसका उनके बाल मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखक और स्कूल के सभी छात्र पीटी सर से बहुत डरते थे। उनके जैसा सख्त अध्यापक न कभी किसी ने सुना था न देखा था। किसी ने उन्हें कभी मुस्कुराते हुए तो देखा ही नहीं था। उन्हें केवल बच्चों को अनुशासन मे रखना था भले ही इसके लिए कितनी ही कठोर सजा क्यों न देनी पड़े। उनके इसी कठोर स्वभाव के कारण उन्हें स्कूल से मुअत्तल कर दिया गया था। उसके बाद वह एक किराए के कमरे में रहने लगे थे। बच्चों ने उन्हें अपने छज्जे में एक तोते से प्रेमपूर्वक बातें करते हुए देखा। भीगे हुए बादाम के छिलके उतार-उतारकर बड़े प्यार-से तोते को खिलाते हुए पाया। यह दृश्य बच्चों के लिए बहुत ही अचंभित कर देने वाला था। उन्हें लगता कि क्या उन तोतों को उनकी भूरी आँखों से डर नहीं लगता। पीटी सर के इस नए रूप ने बच्चों को बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया था। एक व्यक्ति जो इतना सख्त और गुस्से वाला है, वह तोतों के साथ इतना विनम्र कैसे हो सकता है! यह बातें उनके लिए अलौकिक थी ।

19. 'सपनों के-से दिन' शीर्षक इस पाठ के लिए किस प्रकार उचित है? क्या आप इस कहानी को कोई अन्य शीर्षक देना चाहेंगे?

TOPPER'S CORNER

वर्णनात्मक प्रश्न

[3 अंक]

1. 'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नहीं होता था, क्यों? फिर भी ऐसी कौन सी बात थी जिस कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सपनों के से दिन' पाठ में लेखक और उनके दोस्तों को स्कूल ऐसी जगह कभी नहीं लगी, जहाँ भाग के जाई जा सके। उन्हें तो स्कूल कैद की तरह प्रतीत होता था, तथा लेखक और उनके अधिकांश साथी चौथी कक्षा तक रोते-चिल्लाते ही स्कूल जाया करते। इसके पीछे का प्रमुख भय शिक्षकों के मारपीट का ही रहता। परन्तु उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगता जब पीटी मास्टर प्रीतमचंद उन्हें स्काउटिंग का अभ्यास कराते। पढ़ाई की जगह वे उन्हें हाथ में नीली-पीली झंडियाँ पकड़वा देते और वन-टू-थ्री कहकर मार्च करवाया करते। मास्टर प्रीतमचंद ठीक होने पर वे अपनी आँखों को झपकाकर शाबाशी देते, जो बच्चों को कुछ कम चमत्कृत नहीं करता।

[CBSE Topper 2014]

2. आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीकें निर्धारित हैं? 'सपनों के से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के सन्दर्भ में कहाँ तक उचित लगती है? जीवन मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर पाठ 'सपनों के से दिन' में एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का वर्णन है जहाँ दंड देना शिक्षक को कतई अस्वीकार नहीं। वे विद्यार्थी को अनुशासित रखने के लिए कठोर से कठोर दंड अपनाना चाहते हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में (दंड) कानूनन जुर्म है। शिक्षा मंत्रालय ने विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के लिए अनेक बदलावों को अपनाया है, जैसे 'पास' और 'फेल' जैसे शब्दों को निष्कासित करना, तथा दंड व्यवस्था को खारिज करना। यदि बच्चे को हर बात पर दंड दिया जाए, तो वह दब्बू और डरा-डरा सा रहने लगता है। शिक्षकों के भय से वह सही प्रकार से पढ़ नहीं पाता है और स्कूल उसे जेल प्रतीत होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के मुख्य बदलाव के बाद ऐसा कम ही गया है। अब शिक्षकों को आभास होना चाहिए कि विद्यानुकूल परिवेश की सृष्टि तभी होती है, जब विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने, खेल-कूद करने तथा स्कूल के अंदर-बाहर हर प्रकार की आजादी हो। कार्य पूरा न होने पर शिक्षकों को बच्चों के साथ संवेदनात्मक व्यवहार करना चाहिए, न कि उनपे टीका-टिप्पणी करना, उन्हें ताने मारना तथा उन्हें दंड देना।

[CBSE Topper 2014]